प्यार की गंगा बहाईये, आतंक नहीं

सच ही कहा गया है कि हमारा सुन्दर भविष्य भाईचारें में है न कि आपसी विवाद में। संसार में रहने वाला कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं होगा जिसको प्यार की आवश्यकता नहीं होती हो अथवा उसे अच्छा नहीं लगता होगा। चाहे वह अच्छा, बुरा, पापी, महात्मा अथवा आतंकी ही क्यों न हो। हर एक को प्यार की निरन्तर नि:स्वार्थ्ज्ञ प्यार की खोज रहती है। प्यार से विकास, ऊर्जा, भाईचारा, वसुधैव कुटुम्बकम और सुखशान्तिमय समाज बनता है। जबकि आतंक से भय, नफरत तथा समाज खण्ड-खण्ड में बंटकर आपसी प्रेम और मानवीयता तहस-नहस हो जाती है। समाज सिर्फ एक मानवी ढांचा बनकर रह जाती है और उसमें दानवी और विनाश की आग दहक रही होती है। यह सभी मनुष्यों को सोचना चाहिए कि जब हर एक को प्यार की आवश्यकता है, एक ऐसे प्यार की जिसमें शक्ति, सृजन का भाव समाया हो। फिर आतंक के दानव हमारे अन्दर कहाँ से पनप जाते हैं। वास्तव में प्यार, सदभाव और शान्ति मानवीय मूल्य हैं। नफरत, द्वेष, हिंसा और दानवीयता यह किसी भी धर्म और मजहब में नहीं लिखा है। जो लोग इस तरह की आग फैलाते है हकीकत में वे धर्म और मजहब के अर्थ को नहीं समझते हैं।

इतिहास साक्षी है कि संसार में आने वाले महापुरूष राम, रहीम, ईसा, मूसा, मोहम्मद साहब सबने मनुष्यों को एक सूत्र में पिरोने के लिए आध्यात्मिक प्यार की ही वकालत की है। आत्मा को केन्द्रित करते हुए देहभान और नाम-रूप से ऊपर उठाने का प्रयास किया है। मेरे और तेरे के जंजाल से निकलने की ही शिक्षा और दीक्षा देते रहे हैं। दुश्मन की परिभाषा मानवीय मूल्यों से विमुख और दानवीयता फैलाने वाले अवगुणों को ही कहा गया है। हम एक है, और एक ही के हैं। अर्थात हम शरीर रूप से भले अलग-अलग बंटें हुए है परन्तु आत्मिक रूप में धर्म, निवास और पैतृक रूप में सदैव एक ही सूत्र में पिरोये हुए हैं। परमधाम से लेकर सूक्ष्मलोक तक केवल एक धर्म, एक ही भाषा है। एक दूसरे का सहयोग करना, दूसरे का दर्द समझना यह ईश्वर की इबारत कही जाती है। यह तेरा है, मेरा है केवल देह-अभिमान में आने से ही यह नासूर का बीज फैलता है। आखिर में मेरा क्या है? थोड़े से समय के लिए लगता है कि सबकुछ मेरा है परन्तु मेरा क्या होता है जब हम इस दुनियां से विदा होते हैं। यदि होता भी है तो केवल हमारे मूल्य, सद्भाव और एकता के सूत्र में पिरोने का महान कर्म। इन मूल्यों के बदौलत आप ईश्वर के दूत के रूप में युगों-युगों तक जाने जाते हैं। यदि मनुष्य केवल एक जन्म में समाज को प्यार से सींचने की गंगा प्रवाहित करता है तो उसके अनेकों जन्मों तक इसकी प्रालब्ध मिलती रहती है। वह कभी निर्धन नहीं होता है। मनुष्य निर्धन तब होता है जब उसमें मूल्यों की निर्धनता पहले आ जाती है।

वेद-पुराण, कुरान, बाइबिल और गुरू ग्रंथ में कहीं भी हमारी जातिगत परिभाषा दैहिक रूप में नहीं दी गयी है। हमें शारीरिक रूप में कभी भी विभाजित नहीं किया गया है। यदि विभाजन का अर्थ भी बताया गया है तो पाप, पुण्य के आधार पर हुआ है। आत्मा की असली सम्पत्ति प्रेम, सदभाव, आपसी स्नेह, आध्यात्मिक ज्ञान को ही बताया गया है। आज पूरी दुनियां आतंकी साया में भयभीत है। मानव के समाज में मानव से ही मानव दुखी और अशांत है। जबकि प्राचीन समय में मनुष्य राक्षसों से भयभीत होते थे। मनुष्य के अन्दर जब आसुरी वृत्ति आ जाती है तो उसके कर्म मानव से दानव रूप में होने लगते हैं। हमारा देश, धर्म और जाति एक है। शारीरिक आधार पर बंटवारा तो हमने ही किया है अब इसे हमें ही मिटाना होगा। यदि हमें जब कुछ भी समझ में न आये तो हमें दैवी महापुरूषों, देवताओं और ईश्वर के कर्म

की व्याख्या करनी चाहिए। फिर अपने अन्दर उतरकर किये गये कर्मों का आकलन करना चाहिए। इससे दर्पण की भांति अपना पूरा व्यक्तित्व झलकने लगेगा, तब हमें अपने कर्मों पर आपेही शर्म आने लगेगी। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि यदि कोई आपको अच्छा मार्गदर्शन करने वाला नहीं मिलता है तो आपके उनके चरित्रों को देखिये जिन्होंने पूरे समाज को मानवीयता से सींचने का महान कार्य किया है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई के गहरी खाई को पाटने का कार्य किया है। आप प्रकृति को ही ले लिजिए इससे बड़ा कोई उदाहरण नहीं मिलेगा। जब बरसात होती है तब चारो तरफ का गंगा पानी नदी में आकर गिरता है। परन्तु नदी भी उसे सागर में पहुंचा देती है जिससे सागर गन्दगी को समाकर फिर उपर स्वच्छ जल की छवि को बनाये रखता है। इसी तरह हमारा जीवन प्यार की गंगा के समान होना चाहिए। यदि कोई इस तरह का कार्य करता भी है तो उसे ज्ञान सागर परमात्मा से जोड़कर उसके अन्दर व्याप्त मलीन कीचड़े को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

मनुष्य को अच्छी तरह समझना चाहिए कि समाज में हिंसा फैलाना, नफरत का बीज बोना, मानवीय एकता को तोड़ना, भाईचारा को खंडित करना यह सब आसुरी व्यवहार और स्वभाव है। जो लोग ये कार्य करते हैं उनके अन्दर मानवीयता की जगह दानवीयता का भूत होता है। वे भी उसके परवश होते हैं। स्वार्थ में डूबने का जुनून उन्हें नारकीय हद तक ले जाता है। ऐसा नहीं है कि ऐसा करने वालों को सच्चा सुकुन मिलता है। जो आसुरी स्वभाव, दूसरे लोगों को अशांत करता है वह अवगुण आपको शांति कभी नहीं दे सकता है। लोगों की आह और बददुआ मनुष्य को गर्त में ले जाती है। उसका जीवन मनुष्य होते भी पशु के समान होता है। साधू, सज्जन तथा साधक क्यों सुखी और दूसरे का मार्गदर्शक होते हैं जबकि उनके पास रामनाम के धन के अलावा कुछ भी नहीं होता है। उनके पास सबसे बड़ा धन मानवीय मूल्यों और ईश्वरीय शक्तियों का होता है जिसके द्वारा सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। सतयुग त्रेतायुग में तो समग्र रूप से रहने वाले लोगों में एक भाषा, एक धर्म और एक जाति होता है तभी तो उसको रामराज्य और सोने की चिड़िया कहा गया है। इसलिए भारत आज पूरे विश्व में शांतिदूत के रूप में जाना जाता है। परमात्मा ने कभी भी जाति, धर्म, रंग, रूप के आधार पर विभाजित नहीं किया तो हम क्यों इसमें उलझकर हिंसा और नफरत को जन्म दें। हम सब एक परमात्मा की संतान है, हम सबका धर्म, कर्म, देश, वेशभूषा सब एक है। इसलिए हमें ईश्वर के बताये मार्ग पर चलकर प्यार की गंगा बहाकर श्रेष्ठ समाज की स्थापना करना चाहिए जिसमें दु:ख अशांति का नामोनिशान न हो। यही भारत की संस्कृति, भारत का गौरव और ईश्वरीय मर्यादा है। इसलिए आईये हम प्यार की गंगा बहायें, आतंक की आग नहीं। यही सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा विश्व कल्याणकारी भोलेनाथ शिव का संदेश हैं।